

डेरी व्यवसाय की योजना हेतु आवश्यक बिंदु

डॉ. ममता, डॉ. अजय कुमार, डॉ. रजनीश सिरौही एवं डॉ. विशाखा गौर

पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग, दुवासु, मथुरा

डेयरी व्यवसाय मानव इतिहास में सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, लेकिन आज भी क्रियान्वयन के लिहाज से यह सबसे चुनौतीपूर्ण उद्योगों में से एक है। इस व्यवसाय में प्रायः कई किसानों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है, और कई को अक्सर असमय ही यह व्यवसाय बंद करना पड़ जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि पशुपालन पारम्परिक दृष्टिकोण से किया जाता है इसके लिए आवश्यक व्यावसायिक दृष्टिकोण की कहीं न कहीं कमी रह जाती है। इस व्यवसाय से जुड़े अनेकों विशेष क्षेत्र हैं, पशु पालन के अलावा, इसमें पशु स्वास्थ्य, प्रजनन, परिवहन, भंडारण और चारा और चारे के प्रबंधन सहित कई तरह के व्यावसायिक प्रबंधन शामिल हैं, जिनमें व्यापक विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

प्रायः बहुत से लोग बिना किसी अनुभव के डेयरी उद्योग में प्रवेश करते हैं, वे इस तथ्य से अनभिज्ञ रह जाते हैं कि डेरी व्यवसाय सिर्फ उपकरणों पर आधारित नहीं है यहाँ उन्हें जीवित पशुओं के साथ काम करना होता है और इसलिए डेयरी फार्मिंग के लिए अतिरिक्त विशेषज्ञता और धैर्य की आवश्यकता होती है। उदहारण के लिए बहुत से नए पशुपालक, मुख्य रूप से दूध निकालने पर ध्यान केंद्रित रखते हैं, वे इस तथ्य से अनभिज्ञ होते हैं कि गायों को ब्याने के चौथे या पाँचवें महीने तक गर्भवती हो जाना चाहिए। डेयरी पशुओं में गर्मी के लक्षणों को तुरंत पहचानने का महत्व भी कुछ ऐसा है जिसे कई पशुपालक अनदेखा करते हैं। डेयरी फार्मिंग से कम लाभ मिलने के कई कारण हो सकते हैं। आम तौर पर ये समस्याएँ पशुओं से संबंधित होती हैं और इन्हें प्रमुख कारण माना जाता है, फिर भी व्यवसाय नियोजन से संबंधित मुद्दों को नजरअंदाज कर दिया जाता है, जिनका विफल होना डेयरी व्यवसाय में विफलता का मुख्य कारण बनता है। इसलिए इस व्यवसाय को आरंभ करते हुए पहला महत्वपूर्ण कदम परियोजना की व्यवहार्यता का विश्लेषण करना होना चाहिए।

व्यावसायिक डेयरी के सफल न होने का सबसे बड़ा कारण, परियोजना के क्रियान्वयन से पहले उचित योजना का अभाव है। डेयरी व्यवसाय की योजना के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण और संबंधित क्रियाएँ हैं जैसे पशुओं का प्रजनन और आनुवंशिकी, पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन, विभिन्न श्रेणियों के पशुओं के लिए संतुलित आहार प्रदान करना, पोषण संबंधी जरूरतों के आधार पर राशन तैयार करना और समायोजित करना, इष्टतम दूध उत्पादन और पशु कल्याण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार पूरक और योजक का उपयोग करना। अतः इन सभी आयामों पर पशुपालक को ज्ञान होना चाहिए। डेरी व्यवसाय की योजना हेतु विभिन्न बिंदुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए -

बुनियादी ढांचा और प्रौद्योगिकी का उपयोग- फार्म के बुनियादी ढांचे (दूध वाले पार्लरों, चारा भंडारण सुविधाओं और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों) का उचित निर्माण और रखरखाव पर उचित ध्यान देना चाहिए। पशुओं के प्रदर्शन के समय समय पर आकलन हेतु उचित अभिलेख (रिकॉर्ड) रखने

चाहिए, ये आपके प्रबंधन की सही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायक होते हैं। उन्नत मशीनरी और अनुकूलित प्रक्रियाओं के उपयोग के माध्यम से फार्म की क्षमता में वृद्धि पर ध्यान देना चाहिए। नवीन तकनीकों (जैसे कि स्वचालित दूध देने वाली प्रणालियों , दूध ठंडा करने वाले टैंकों और गुणवत्ता परीक्षण उपकरणों का उपयोग) का प्रयोग , उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार के लिए तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए ।

पशुओं के लिए चारा प्रबंधन- पशुओं के लिए वर्ष भर चारा और आहार पूर्ति पर स्पष्ट योजना होनी चाहिए। इसके लिए उच्च गुणवत्ता वाले चारे और साइलेज का उत्पादन करने के लिए फसलों को उगाना और उनका प्रबंधन करने पर ज्ञान और प्रशिक्षण होना आवश्यक है । फसलों या पशु आहार के पोषण मूल्य को बनाए रखने और उन्हें खराब होने से बचाने के लिए उनके उचित भंडारण और प्रसंस्करण के लिए नवीन प्रथाओं को अपनाना चाहिए। फसलों के उत्पादन में खाद को रीसायकल करना और प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। मुख्य रूप से अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण की रक्षा के लिए रोटेशनल चराई, संरक्षण जुताई और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना चाहिए। उचित जल प्रबंधन हेतु , सफाई और सिंचाई उद्देश्यों के लिए जल संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

व्यवसाय और वित्तीय प्रबंधन- इसमें ध्यान देने वाले विशेष बिंदु हैं, वित्तीय नियोजन या बजट बनाना, वित्तीय पूर्वानुमान लगाना और आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए नकदी प्रवाह का प्रबंधन करना। पशुपालन हेतु पोषण, श्रम, पशु चिकित्सा और स्वस्थ देखभाल, उपकरणों का रखरखाव आदि से संबंधित खर्चों की निगरानी रखना और उनका नियंत्रण करके लागत का प्रबंधन करना । दूध की बिक्री, मूल्य वर्धित उत्पाद बनाना, कृषि-पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन जैसे विभिन्न लाभकारी प्रथाओं का समावेश करना और इसके लिए निरंतर डेयरी विज्ञान , प्रौद्योगिकी और प्रबंधन प्रथाओं में प्रगति के बारे में जानकारी रखना । अपने उत्पाद की सही बिक्री के लिए उपभोक्ताओं की बदलती पसंद, बाजार के रुझान और प्रतिस्पर्धा को समझना । उत्पादों को अलग करने और ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक ब्रांड के रूप में पहचान बनाना और विपणन अभियान विकसित करना। स्थानीय समुदाय के साथ सकारात्मक संबंध बनाना और आउटरीच और शिक्षा कार्यक्रमों में को प्रोत्साहित करना । पशु कल्याण हेतु नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देना और सतत विकास की और अग्रसर होना।

मानव संसाधन प्रबंधन- स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना , सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देना। डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को बेहतर बनाने के लिए कर्मचारियों और स्थानीय किसानों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षिक अवसर प्रदान करना।

कुल मिलाकर डेरी व्यवसाय की सफलता हेतु पहला महत्वपूर्ण कदम परियोजना की व्यवहार्यता का विश्लेषण करना है। पशुपालक को चाहिए कि वे एक कुशल व्यवसाय योजना बनाएं जिसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें -

- डेयरी फार्म के पैमाने (छोटा, मध्यम, बड़ा) और उत्पादों के प्रकार (दूध, पनीर, दही) पर निर्णय लें।
- डेयरी परियोजना के अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों को परिभाषित करें।

- अपने लक्षित बाजार में डेयरी उत्पादों की मांग का आकलन करने के लिए बाजार का अनुसंधान करें, जिसमें संभावित ग्राहकों और अपने प्रतिस्पर्धी का अनुमान मिल सके।
- जल उपलब्धता, चारा और श्रमिकों की उपलब्धता जैसे आवश्यक संसाधनों का मूल्यांकन करें।
- परमिट, लाइसेंस और पर्यावरण नियमों सहित कानूनी और नियामक आवश्यकताओं को समझें।
- प्रारंभिक निवेश, परिचालन लागत, अनुमानित आय और नकदी प्रवाह और वित्तपोषण सहित एक विस्तृत वित्तीय योजना तैयार करें।
- परियोजना की संभावित लाभप्रदता निर्धारित करने के लिए लागत और लाभ का विश्लेषण करें।
- डेयरी फार्मिंग के लिए सरकारी अनुदान और सब्सिडी का पता लगाएं। बैंकों या वित्तीय संस्थानों से कृषि ऋण के लिए आवेदन करें।
- दूध दोहने के क्रम, भोजन की दिनचर्या और झुंड प्रबंधन सहित दैनिक संचालन की रूपरेखा तैयार करें।
- दूध के मूल्य निर्धारण , वितरण चैनल और प्रचार सहित अपने उत्पादों के विपणन के लिए एक रणनीति विकसित करें।
- पशुओं में बीमारी के प्रकोप , प्राकृतिक आपदाओं और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसे जोखिमों से बचाव के लिए बीमा खरीदें।
- आपात स्थितियों और अप्रत्याशित घटनाओं के लिए आकस्मिक योजनाएँ विकसित करें।

अंततः पशुपालक को यह समझना आवश्यक है कि डेयरी फार्मिंग सिर्फ पशु पालन से कहीं अधिक है। इसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो की कृषि विज्ञान , अर्थशास्त्र, प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करता हो। सभी उपलब्ध संसाधनों से प्रासंगिक और तथ्यात्मक जानकारी एकत्र करें और बुद्धिमानी से योजना बनाएं। योजना बनाना किसी भी डेयरी व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण पहलू है , जिसमें प्रारंभिक अवधारणा से लेकर उसके संचालन तक, सब कुछ शामिल होता है। एक सफल डेयरी व्यवसाय के लिए पशुपालकों को इसकी योजना तैयार करने में पर्याप्त समय लगाना चाहिए।